https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

ड्रग थेरेपी

के संस्करण 2016

4. कोर्टिकोस्टेरॉयड

4.1 विवरण

कोर्टिकोस्टेरॉयड वह रासायनिक पदार्थ (हार्मोन) है जो शरीर में बनता है। समान प्रकार के पदार्थ बाह्य रूप से भी बनाए जा सकता है तथा इनका उपयोग बाल गठिया संबंधी रोगों के इलाज में किया जाता है।
बच्चों को दिए जाने वाले स्टीरॉयड एथलीट द्दारा उपयोग किए जाने वाले स्टीरॉयड से अलग होते है।
स्टीरॉयड जो की सूज पैदा करने वाली अवस्थाओं में उपयोग होते है उन्हें ग्लुकोकोर्टिकोइड्स कहते है। यह वहुत तेज काम करने वाली दवा है जो की प्रतिरिक्षा तंत्र के काम में रुकावट डालती है और सूजन को कम करती है। अधिकतर इनका उपयोग बीमारी के जल्द नियंत्रण के लिए किया जाता है जब तक की अन्य दवाएं कोर्टिकोस्टेरॉयड के साथ मिलकर काम करना शुरू नहीं करती।
प्रतिरिक्षा तथा सूजन को कम करने वाले प्रभाव के आलावा इन दवाओं के दूसरे प्रभाव भी है जैसे हृदय संबंधी तथा तनाव की प्रतिक्रिया, पानी शक्कर और वसा का शरीर में उपयोग तथा BP का नियंत्रण।
चिकित्सा संबंधी प्रभावों के आलावा इनके दुष्प्रभाव भी है जो लम्बे उपचार की वजह से होते है। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चा जिस डॉकटर की देखरेख में है उन्हें बीमारी के इलाज और दवा के दुष्प्रभावों को कम करने का पूरा अनुभव होना चाहिए।

4.2 डोज / देने के तरीके

कोर्टिकोस्टेरॉयड दवाओं को मूँह से या नसों में इंजेक्शन से लिया जा सकता है अथवा जोड़ों में इंजेक्शन और ड्राप या चमड़ी पर लगाकर उपयोग किया जाता है।
डोज तथा देने का तरीका बीमारी और उसकी गंभीरता के आधार पर किया जाता है। अधिक डोज जब इंजेक्शन द्दारा दिया जाता है तो वह अधिक तीव्र और प्रभावी होता है।
खाने वाली दवाएँ अलग अलग मात्रा में उपलब्ध है। प्रेडनीसोन या प्रेडनिसोलोन सबसे अधिक उपयोग किए जाते है।

दवा के डोज तथा कितनी बार देना चाहिए इसका कोई सामन्य नियम नहीं है।
समान्यता: सुबह में अधिकितम २ मिग्रा / की ग्रा प्रतिदिन (अधिकितम ६० मिग्रा प्रतिदिन) अथवा हर दूसरे दिन के डोज से कम से कम दुष्प्रभाव होते है लेकिन कभी कभी दिन में दो या तिन बार बांटकर दी गई डोज बीमारी के नियंत्रण में अधिक प्रभावी होती है। गंभीर बीमारी में कई चिकित्सिक अधिक दोज मे मिथाइल प्रेडनसिोलोन नसों में इंजेक्शन द्दारा देते है (ज्यादातर दिन में एक बार कई दिनों तक ३०मिग्रा / की ग्रा प्रतिदिन, अधिकितम १ ग्रा प्रतिदिन)
कई बार प्रतिदिन छोटे डोज में नसों से इंजेक्शन दिए जाते है जब खाने वाली दवा लेने में कोई समस्या होती है।
जुवेनाइल इडिओपेथिक आर्थराइटिस, में सूजे हुए जोड़ों में लम्बे समय काम करने वाले कोर्टिकोस्टेरॉयड के इंजेक्शन अच्छा प्रभावी इलाज है। ट्राइमसिनोलोन छोटे क्रिस्टिल के रूप में स्टीरॉयड है जो जोड़ों में इंजेक्शन देने के बाद अंदर फैल जाता है और धीरे धीरे लम्बे समय तक दवा का प्रभाव रहता है।
दवा का असर कई मरीजों में कई महीनों तक रहता है। एक बार में एक या अधिक जोड़ों में एक साथ इंजेक्शन दिए जा सकते है। इसके लिए दर्द कम करने वाले दवाएँ जैसे क्रीम या स्प्रे या लोकल तथा जनरल एनेस्थीसिया दिया जाता है। जो जोड़ो की संख्या तथा रोगी की उम्र पर निर्भर करता है।

4.3 बुरे प्रभाव

कोर्टिकोस्टेरॉयड से दो मुख्य प्रकार के दुष्प्रभाव होते है एक वह जो दवा के लंबे समय तक उपयोग से हैं और दूसरे वह जो इलाज बंद करने की वजह से होते है। यदि इन दवाओं को लगातार एक सपताह लिया जाए तो अचानक बंद नहीं किया जा सकता है क्योंकि उसके गंभीर बुरे प्रभाव हो सकते है। यह प्रभाव बाहर से दिए जाने वाले स्टीरॉयड की वजह से शरीर में अपने आप बनने वाले स्टीरॉयड के कम होने के कारण होता है।
दुष्प्रभाव सामन्यत: डोज पर निर्भर होते है जैसे समान टोटल डोज कई भागों में देने से बुरे प्रभाव दवा को रोज एक भाग में देने की तुलना में अधिक होते है। इनमे मुख्य है अधिक भूख लगना वजन बढ़ना तथा त्वचा में स्ट्रेच मार्क। इसलिए वजन को नियंत्रण में रखने के लिए संतुलित भोजन करना चाहिए जिस में वसा तथा शक्करर की मात्रा कम और फाइबर अधिक होना चाहिए। चेहरे पर मुँहासों को त्वचा पर लगाने वाली दवाओं से ठीक किया जा सकता है। नींद की समस्या, मूड में बदलाव और शरीर में कम्पन महसूस होना भी आम है। लम्बे समय तक इन दवाओं के उपयोग से शारीरिक विकास ठीक तरह से नहीं हो पाता है। इस महत्त्वपूर्ण दुष्प्रभाव को रोकने के लिए दवा को कम से कम डोज व् कम से कम समय के लिए देना चाहिए। ०.२ मिग्रा / की ग्रा /प्रतिदिन (अथवा अधिकितम १० मिग्रा रोज) के डोज से शारीरिक विकास की समस्या कम होती है।
रोगों से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है जिससे बार बार या गंभीर इन्फेक्शन हो सकते है जो की प्रतिरोधकता के कम होने की सीमा पर निर्भर करता है। इन बच्चों में चिकिन पॉक्स गंभीर हो सकता है इसलिए लक्षण आते ही या किसी चिकिन पॉक्स रोगी के संपर्क में आते ही डॉक्टर से सलाह लेना चाहिए।

हर एक स्थिति के आधार पर चिकनपॉक्स के विरुद्ध एंटीबॉडी इंजेक्शन या एंटीवायरल एंटीबायोटिक दिए जा सकते हैं।
कई छुपे हुए दुष्प्रभाव नियमित जाँच पर देखे जा सकते हैं। उनमें से एक और ऑस्टियोपोरोसिस है , जिसमें हड्डियों से कैल्शियम का क्षय हो जाता हैं जिसके कारण हड्डिया कमजोर हो जाती हैं और फेक्चर होने की संभावना बढ़ जाती है। ऑस्टियोपोरोसिस की जाँच बोन डेन्सिटोमेट्री से की जाती है। विटामिन D और कैल्शियम की पर्याप्त डोज देने पर (१००० मिग्रा प्रतिदिन) इसे बढ़ने से रोका जा सकता है।
आँखों संबंधी बुरे प्रभाव मोतियाबिंदु तथा ग्लूकोमा हैं। यदि ब्लडप्रेशर अधिक बढ़ता है तो नमक कम लेने कि सलाह दी जाती है। खून में ग्लूकोज भी बढ़ सकता है जिससे स्टीरॉयड संबंधी डायबिटीज होती है तथा खाने में वसा और शक्कर कम लेना उपयोगी होता है।
जोड़ों में स्टीरॉयड इंजेक्शन के कोई खास दुष्प्रभाव नहीं देखे गए है। इंजेक्शन देते समय दवा के बाहर निकल जाने का खतरा होता है जिससे उस भाग की त्वचा का क्षय तथा कैलसिनोसिस हो सकता हैं। स्टीरॉयड इंजेक्शन से इन्फेक्शन का खतरा काफी कम होता है (लगभग १०,००० में एक)

4.4 मुख्य बाल गठिया रोग संबंधी उपयोग
कोर्टिकोस्टिरोइड को लगभग सभी गांठिया संबंधी बिमारियों में उपयोग किया जा सकता है समान्यता: कम से कम डोज और समय के लिए उपयोग होना चाहिए।

">http://labels.fda.gov http://labels.fda.gov